पत्र I

1. आदिकाल के प्रमुख प्रवृत्तियां :-
(i) आश्रयदाता की प्रशंसा तथा राष्ट्रीय भावना का अभाव :-
(ii) संदिग्ध रचनाओं का प्राचुर्य :-
(iii) ऐतिहासिकता का अभाव :-
(iv) युद्धों का यथार्थ वर्णन :-
(v) भावोन्मेष का प्रधान्य :-
(vi) वीर और शृंगार रस :-
(vii) प्रकृति-चित्रण :-
(viii) रासो ग्रन्थ
(ix) ग्रन्थ के दो रूप
(x) जनजीवन से सम्पर्क नहीं
(xi) छन्दों का विविधमुखी प्रयोग :-
(xii) डिंगल और पिंगल भा
निष्कर्ष :-

2. भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियां :-
(i) नाम की महत्ता :-
(ii) गुरु महिमा :-
(iii) भक्ति भावना :-
(iv) अहंकार का त्याग :-
(v) समन्वय की भावना :-
(vi) बहुजन हिताय :-
(vii) लोक भाषाओं की प्रधानता :-
(viii) वीर काव्यों की रचना :-
(ix) प्रबन्धात्मक चरित काव्य :-
(x) नीति काव्य :-
(xi) गद्यात्मक साहित्य -
(xii) रीति काव्यों की रचना

3. रीतिकाल के सामान्य प्रवृत्तियां :-
(i) लक्षण ग्रन्थ निरूपण :-
(ii) शृंगारिकता :-
(iii) आलंकारिकता :-
(iv) भक्ति एवं वैराग्य निरूपण :-
(v) मुक्तक काव्य रूप
(vi) ब्रजभाषा की प्रधानता :-
(vii) वीररसपूर्ण काव्य :-
(viii) आलंबन रूप में प्रकृति चित्रण :-
(ix) नारी निरूपण :-
(x) पराजय की भावना :-

पत्र – प्रथम

2. रीतिकाल की महत्वपूर्ण विशेषता :-

(i) अपने आश्रयदाता की प्रशंसा :
(ii) शृंगार भावना की प्रमुखता :
(iii) नायिका भेद :
(iv) ऋतु - वर्णन और बारह - मासा वर्णन :
(v) नख - शिख वर्णन :
(vi) कवित्त, सवैया और दोहा छन्दों का प्रयोग :

3. सिद्ध साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियां ?

(i) गुरु के महत्व को स्वीकारा गया है :
(ii) शास्त्रीय चिंतन पक्ष गौण :
(iii) रूढ़ियों आडम्बरों का विरोध :
(iv) रहस्यवादी भावना के साथ योगसाधना पर बल :-
(v) वैदिक देवताओं के प्रति अनास्था :
(vi) ब्राह्मणवाद के प्रति अवज्ञा एवं वेदों के प्रति असम्मान :
(vii) चमत्कार प्रदर्शन की भावना :
(viii) जाँति - पाँति के प्रति अनास्था :
(ix) वर्णभेद की निन्दा :
(x) सिद्धों की साधना को गुह्य साधना कहा गया :-